दिनांक :- 14-04-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

स्नातक :- प्रथम खंड प्रतिष्ठा इतिहास
प्रथम पत्र

इकाई - दो - सिंधु घाटी सभ्यता

लेखक का नाम :- डॉ० फारूक आजम (अतिथि शिक्षक)

सभ्यता विकास के चरण :-

(1) नव पाषाण काल :- 5500 ईसा पूर्व - 3500 ईसा पूर्व)

इस काल में मानव केवल खाद्य पदार्थों का उपभोक्ता ही नहीं रहा बल्कि उत्पादक भी बना। इसी समय बलूचिस्तान तथा सिंधु के मैदानी भागों में स्थित मेहरगढ़ तथा किली गुल मुहम्मद जैसी बस्तियाँ उभरी, खेती की शुरुआत हुई तथा स्थायी गाँव बसे

इस काल के महत्वपूर्ण स्थल है :-

बलूचिस्तान क्षेत्र में : मेहरगढ़, किली गुल मुहम्मद, दंब सादात, राणा घुंडई, कुल्ली, नाल, बालाकोट गोमल घाटी में गुमला रहमान ढेरी। पंजाब में :- सरायखाला, जलीलपुर

सिंध :- कोटदीजी, आमरी (आमरी, नव पाषाणकाल, पूर्व सिंधु काल तथा परवर्ती सिंधु सभ्यता के महत्व का संक्रमणकालीन स्थल लगता है।

राजस्थान : कालीबंगा।

(2) पूर्व हड़प्पाकाल (3500-2600 ईसा पूर्व)

बर्तन तथा औजारों में ताँबे का प्रयोग प्रारंभ
कृषि में हल का प्रयोग प्रारंभ
ऊँची-ऊँची दीवारों का निर्माण
चाक द्वारा बर्तन निर्माण की पद्धति विकसित हुई
अन्नागारों का निर्माण होने लगा
सुदूर व्यापार का प्रारंभ

पूर्ण विकसित हड़प्पा युग (2600-1800 BC) : समपूर्ण विकसित क्षेत्र 12,99,600 वर्ग किलोमीटर था। रंगनाथ राव के अनुसार यह पूरब से पश्चिम 1600 किलोमीटर एवं उत्तर से दक्षिण 1400 किलोमीटर था। हड़प्पा सभ्यता से संबंधित अब लगभग 1400 स्थल प्रकाश में आए हैं। इनमें लगभग 8-9 स्थल ऐसे हैं जिनको शायद नगरीय स्थल के रूप में की जा सकती है। इस सभ्यता का विस्तार उत्तर में मांडा, दक्षिण में दायमाबाद,

Scanned with CamScanner

पश्चिम में सुत्कागेंडोर तथा पूरब में आलमगीरपुर है।
इस सभ्यता से संबंधित स्थल सिंध ब्लूचिस्तान, उत्तरी
पश्चिमी सीमांत, बहावलपुर, राजस्थान हरियाणा गंगा-
यमुना दोआब, जम्मू, गुजरात तथा उत्तरी अफगानिस्तान
से प्राप्त हुए हैं। नवीन शोधों के आधार पर बरेली के
पास परिक्रमानगरी से सिंधु सभ्यता के कुछ अवशेष प्रकाश
में आए हैं। इस आधार पर पूरब में इसका विस्तार बरेली
तक माना जाने लगा है।

सिंध: मोहनजोदड़ो, चान्हुदड़ो, जुडेरजोदड़ो, आमरी, कोट दीजी, अलीमुराद।
पंजाब: हड़प्पा, रोपड़, बारा, संघोल।
हरियाणा: राखीगढ़ी, मित्ताथल, बनवाली।
राजस्थान: कालीबंगा।
गुजरात: कच्छ प्रदेश में देसलपुर, सुरकोटडा, धौलावीरा।
काठियावाड़ प्रदेश में रंगपुर, रोजदी, लोथल, मालवन। सूरत)
भगतराव (गुजरात के मुख्य भूमि पर सबसे दक्षिण में

स्थित किम-सागर संगम पर)

जम्मू :- मांडा (चेनाब के दाहिने किनारे पर स्थित)

गंगा-यमुना और दोआब : आलमगीरपुर (मेरठ), बड़गाँव
हुलास (सहारनपुर)

बलूचिस्तान :- ~~कुडवालाथूर~~ । सुत्कागेंडोर, सोतकाकोह
बालाकोट, डाबरकोट

बहावलपुर : कुडवालाथूर ।

अफगानिस्तान : शोर्तुघई ।

कालानुक्रम के संबंध में विभिन्न दृष्टिकोण :-

एच. हेरास ने नक्षत्रीय आधार पर इसकी उत्पत्ति का काल 6000 ईसा पूर्व माना है ।

मेसोपोटामिया के शासक सरगान का 2350 ईसा पूर्व का अभिलेख मिला है, उसके आधार पर इसकी समयावधि 3250-2750 ईस्वी पूर्व मानी गयी है ।

जॉन मार्शल : 3250 ईसा पूर्व - 2750 ईसा पूर्व

अर्नेस्ट मैके : 2800 ईसा पूर्व - 2500 ईसा पूर्व

एम. एस. वत्स : 3500 ईसा पूर्व - 2700 ईसा पूर्व

सी. जी. गैड : 2300 ईसा पूर्व - 1750 ईसा पूर्व

Scanned with CamScanner

व्हीलर पिगट : 2500 ईसापूर्व - 1500 ईसा पूर्व

ऑल्चिन : 2250 ईसा पूर्व - 1750 ईसा पूर्व

डी० पी० अग्रवाल : 2300 ईसा पूर्व - 1700 ईसा पूर्व

जी० एफ० डेल्स : 2154 ईसा पूर्व - 1866 ईसा पूर्व

फेयर सर्विस : 2000 ईसा पूर्व - 1500 ईसा पूर्व

कार्बन डेटिंग पद्धति : 2350 ईसा पूर्व - 1750 ईसा पूर्व

N.C.E.R.T : 2500 ईसा पूर्व - 1800 ईसा पूर्व

विकसित अवस्था : 2200 ईसा पूर्व - 2000 ईसा पूर्व

प्रमुख स्थल

हड़प्पा :- पाकिस्तानी पंजाब के मांटगोमरी जिले (वर्तमान साहीवाल) में रावी नदी के बायें किनारे पर स्थित है। इसकी खुदाई दयाराम साहनी के नेतृत्व में (माधोस्वरूप वत्स सहायक) 1921 में हुई थी।

संपूर्ण शहर दो भागों में विभाजित है।

पश्चिमी भाग में दुर्ग है जिसे चारों ओर से दीवार से घेरा गया है। यह दीवार कच्ची ईंटों से निर्मित है जिसे

बाहर से पक्की ईंटो से ढक दिया गया है।

पूर्वी भाग रिहायसी इलाका था।

किले से अधिक पुरातात्विक साक्ष्य उत्तरी भाग से प्राप्त हुआ है। यह सम्भवतः मजदूरों की बस्ती थी। यहाँ से मजदूरों का आवास, अन्नगार तथा उनके काम करने के चबूतरे का अवशेष मिला है।

मोहनजोदड़ो के विपरीत हड़प्पा का अन्नागार दुर्ग से बाहर स्थित था।

यहाँ छः छः के दो कतारो में धान्य कोठार मिले हैं। अनाजो को दबाने के लिये 18 चबूतरो तथा उसकी दरारों में जौ एंव गेहूँ के दाने मिले हैं

दो कतारो में श्रमिक आवास मिले हैं जिनकी संख्या 15 तक है।

यहाँ से धोती पहने एक मूर्ति प्राप्त हुई है।

बलुए पत्थर के दो मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं। इनसे शरीर संरचना का ज्ञान मिलता है। इन मूर्तियों के कंधो तथा गले में छेद है।

एक बर्तन पर मछुआरे का चित्र बना मिलता है।

शंख का बना हुआ एक बैल प्राप्त हुआ है।

नटराज की आकृति जैसी स्लेटी-चूने पत्थर की नृत्य मुद्रा वाली मूर्ति प्राप्त हुई है

ठोस पहिये एवं छतरी से युक्त तांबे की बनी इक्का गाड़ी प्राप्त हुई

एक मुहर में पेड़ में सांप दबाये गरूड़ का चित्रण है।

कांसे का एक दर्पण मिला है।

यहाँ की मृण्मूर्तियों में पुरूष मूर्तियों की अधिकता है।

यहीं से सिर के बल खड़ी नग्न स्त्री का चित्र मिला है जिस के गर्भ से एक पौधा निकलता दिखाई देता है।

एक मुद्रा पर खरगोश का अंकन है।

यहाँ कब्रिस्तान क्षेत्र में R-37 नामक कब्र में ताबूत मिला है।

यहाँ के एक प्रसाधन केस प्राप्त हुआ है।

सिंधु सभ्यता की सर्वाधिक अभिलेख युक्त मुहरे हड़प्पा से ही प्राप्त हुई है। (जबकि सर्वाधिक संख्या में मुहरे मोहनजोदड़ो से मिली है।